विचारों का स्वराज बरास्ते आलोचनात्मक चिन्तन

समाज विज्ञान शिक्षण में विवादास्पद मुद्दों की भूमिका

ऋषभ कुमार मिश्र

विविधता समाज का एक सुन्दर सच है। मत भिन्नता भी इसी सच्चाई से उपजी हुई एक ख़ासियत है। यह मत भिन्नता एक गतिशील चिन्तन और सामाजिक चेतनशीलता के लिए बेहद ज़रूरी बात है। शिक्षण की प्रक्रिया में यही मत भिन्नता कई बार एक चुनौती बन जाती है। अधिकांशतः शिक्षक की इस बात की तैयारी नहीं होती है कि वह इस स्थिति को निरपेक्ष रूप से समालोचनात्मक चिन्तन के अवसर के रूप में तब्दील कर सके। असहमतियों से असहज हुए बिना इसे एक संसाधन के रूप में देख सके और कक्षा को एक स्वस्थ विमर्श के लिए तैयार कर सके। प्रस्तुत आलेख में लेखक ने ऐसे ही कुछ अनसुलझे प्रश्नों को लेकर शिक्षकों के एक समूह से की गई बातचीत के आधार पर अपने विचार रखे हैं। सं.

पिछले कुछ महीनों से वयस्कों की दुनिया जिन विषयों पर बहस कर रही है उनपर विचार कीजिए। अर्थव्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, चुनाव, राजनीतिक वाद-प्रतिवाद से लेकर स्थानीय सामुदायिक समस्याएँ, आदि क्षेत्रों से जुड़े विषय अख़बारों, सोशल मीडिया, सार्वजनिक स्थानों की बहसों में उपस्थित हैं। इस तरह के विषयों को लेकर आम जनता में रायशुमारी की जाए तो हम पाएँगे कि इनकी अपनी कुछ विशेषताएँ हैं– एक से अधिक और परस्पर विरोधी मत वाले समूहों की उपस्थिति, समूहों का केवल अपने मत के पक्ष में अति आग्रही होना, उसके विपरीत तर्क या प्रमाण को स्वीकार करने को तैयार न होना, एकपक्षीय सूचनाओं की प्रस्तुति और उन्हें तोड़-मरोड़कर व्याख्यायित करना, आदि। इस पूरी प्रक्रिया में विचारणीय समस्या पर भावना एवं संवेग का रंग चढ़ा दिया जाता है। इस रंग को जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, आदि की 'ब्लीच' से गहरा कर दिया जाता है। परिणामस्वरूप, परस्पर विरोधी मत रखने वाले समूहों के बीच संवाद या समाधान की सम्भावना के स्थान पर मतभेद हिंसा की हद तक गहरा हो जाता है।

इन विषयों के बारे में जैसे वयस्कों में अलग-अलग मत और उसके प्रति आग्रह होते हैं, वैसा ही बच्चों में भी होता है। परिवार, समुदाय और मीडिया के प्रभाव में बच्चों में भी आपसी विभेद के लक्षण आप देख सकते हैं। हमारे यहाँ कक्षा के बाहर परिवार, समुदाय और दोस्तों के बीच भी सवाल पूछना, तर्क करना, आदि की सराहना नहीं की जाती है। हमारे बच्चों में एक प्रवृत्ति होती है कि वे किसी 'बड़े' द्वारा बताई गई बात बिना तर्क के स्वीकार करने को तत्पर होते हैं। हम रोज़मर्रा के जीवन में भी उनसे विवादास्पद विषयों पर बात नहीं करना चाहते हैं। इन परिस्थितियों में विवादास्पद विषयों पर सोद्देश्यपूर्ण हस्तक्षेप नहीं होता है तो बच्चे जो सुनते, देखते हैं उसे ज्यों-का-त्यों सच मानने लगते हैं। धीरे-धीरे उनमें देखी-सुनी सामग्री का मूल्यांकन किए बिना विश्वास कर लेने की आदत विकसित हो जाती है। इस तरह की 'आदत' का विकसित होना ख़तरनाक है। इससे उनकी समझ की धार कुन्द हो जाती है। एक ज्ञान निर्माता के रूप में उनकी सक्रियता और भावी नागरिक की भूमिका कमज़ोर हो जाती है। उनमें मतारोपण से प्रभावित होने का ख़तरा

बढ़ जाता है। इस तरह से उनमें मतावलम्बी बन जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। ऐसे व्यक्ति विवादों के बीच विद्वेष को अपरिहार्य मान लेते हैं, जो दुनिया को सुन्दर बनाने या दुनिया में सुन्दरता खोजने के स्थान पर 'कुछ' चश्मों से दुनिया को देखने लग जाते हैं, और सूझ-बूझ से फ़ैसला लेने की बजाय आवेगपूर्ण फ़ैसलों के वशीभूत हो जाते हैं। हालाँकि, बच्चों के बारे में व्यक्त की जा रही इस सैद्धान्तिक परिकल्पना को हम वयस्क स्वीकार करने में झिझकते हैं लेकिन इसके समर्थन में आप अपने आसपास



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

ऐसे बच्चों और किशोरों को देख सकते हैं जो अपने से भिन्न समूहों और समुदायों को स्वीकार नहीं करना चाहते, जो विविधता को विभेद मानते हैं, और जो 'सच' को खोजने की बजाय, मान लेने को आकुल रहते हैं। इस स्थिति में सवाल उठता है कि मताग्रही बनती भावी पीढ़ी में विवेक और तर्क के लिए कोई स्थान है या नहीं? समानुभूति के भाव के लिए कोई सम्भावना है क्या?

एनसीएफ़ 2005 में इसकी पुरज़ोर वकालत की गई है। यह दस्तावेज़ इस बात को गहरी चिन्ता के साथ उठाता है कि विवेकशील, चिन्तनशील और वैज्ञानिक सोच वाला नागरिक बनाने की दिशा में शिक्षा कैसे प्रभावी बने। इसकी एक सम्भावना हमारे स्कूल हो सकते हैं। जहाँ इन विषयों को आलोचनात्मक नज़रिए से देखा जाए, जहाँ वैधता की कसौटियों से बच्चों को परिचित कराया जाए, जहाँ वाद-विवाद के साथ दूसरों की सराहना और स्वीकृति के भी मूल्य हों। क्या हमारे स्कूलों में ऐसा होता है? इस स्थिति का मुआयना करने के लिए मैंने कुछ सामाजिक विज्ञान शिक्षकों से बातचीत की। उस बातचीत के ब्यौरा को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

शिक्षकों से बातचीत के बिन्दु

मैंने सामाजिक विज्ञान के 10 शिक्षकों से बातचीत की। ये शिक्षक वर्धा के 4 अलग-अलग सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाते थे। सभी पुरुष शिक्षक थे। इन सभी का अध्यापन अनुभव 5 वर्ष से अधिक था। इन शिक्षकों से बातचीत करने का लक्ष्य यह पता लगाना था कि वे सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए विवादास्पद विषयों के बारे में क्या राय रखते हैं? क्या ऐसे विषयों को वे अपनी कक्षा में स्थान देते हैं? इसके लिए वे किन शिक्षणशास्त्रीय युक्तियों और संसाधनों का उपयोग करते हैं? वे इन चर्चाओं में अपने विद्यार्थियों की भूमिका को कैसे देखते हैं? इन आयामों को आधार बनाकर एक अर्द्ध-संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इसकी मदद से इन शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया। ये साक्षात्कार उनसे स्कूल में ही लिए गए। प्रत्येक साक्षात्कार लगभग 40 से 50 मिनट का था।

विवादास्पद मुद्दों की प्रकृति और महत्ता

सामाजिक विज्ञान शिक्षकों से बातचीत की शुरुआत इस सवाल के साथ की गई कि उनके अनुसार विवादास्पद मुद्दे कौन-से हैं जो सामाजिक विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित हैं। इस बारे में शिक्षकों ने बताया कि विवादास्पद मुद्दों से उनका आशय ऐसे विषयों से है जिनके बारे में विद्यार्थी एक से अधिक राय रखते हैं।

शिक्षकों ने इस तरह के विषयों के निम्नलिखित उदाहरण साझा किए– क्या हाइवे का बनना गाँवों के विकास में मददगार होगा? क्या जाति के आधार पर मतदान करना उचित होता है? क्या उद्योगों का निजीकरण विकास को गति देता है? शिक्षकों ने बताया कि ऐसे विषय भी विवादास्पद विषय होते हैं जिनके बारे में दुष्प्रचार फैलाया गया हो। इसके उदाहरण हैं– गाँधी के व्यक्तिगत जीवन से जुड़े दुष्प्रचार, जाति, धर्म, पन्थ से सम्बन्धित और राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों से सम्बन्धित दुष्प्रचार। शिक्षकों का यह भी मानना था कि सामाजिक कुरीतियों, पूर्वाग्रह, रूढ़ियों से जुड़े विषय जैसे– जेंडर के आधार पर श्रम विभाजन, घरेलू हिंसा, क्षेत्रीय, भाषाई एवं जातीय वैमनस्य भी विवादास्पद होते हैं। इसी क्रम में कुछ शिक्षकों ने स्थानीय समस्याओं से जुड़े विषयों जैसे– बाल श्रम, किसान आत्महत्या, जल की समस्या आदि को भी पहचाना और इनके बारे में बातचीत की। कुछ शिक्षकों का मानना था कि जब बच्चों के अनुभव किताब से भिन्न होते हैं तो भी विवाद की सम्भावना बढ़ जाती है। इसके लिए भागीदार शिक्षकों ने शिक्षा का माध्यम, संवैधानिक अधिकार, सरकार से मिलने वाली सुविधाएँ, आदि का उदाहरण दिया। इसी चर्चा में इन लोगों ने सरकारी नीतियों और योजनाओं से असहमति को भी विवाद का एक कारण बताया।

भागीदार शिक्षकों के विचारों से स्पष्ट है कि वे अपनी कक्षा और विद्यार्थियों के सन्दर्भ में विवादास्पद मुद्दों के स्रोतों पहचान रहे हैं। इन मुद्दों की मूल विशेषता मत विभिन्नता है। शिक्षकों के उदाहरणों में देखा जा सकता है कि वे समसामयिक विषयों को भी इस वर्ग में रख रहे हैं। इन विषयों में मत भिन्नता का स्रोत परिवार, समुदाय और मीडिया हैं। इन परिवेशों में 'स्वीकृत मत' के अतिरिक्त जिन विचारों की उपस्थिति होती है वे ही किसी मुद्दे को विवादास्पद बनाते हैं। इसी क्रम में जब शिक्षकों से पूछा गया कि क्या ये विवादास्पद मुद्दे कक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं? तो सभी शिक्षकों ने इसकी स्वीकृति दी और अपने मत के पक्ष में बताया कि ये मुद्दे विद्यार्थियों को विचार करने की क्षमता और अवसर देते हैं। शिक्षकों का मानना था कि जब कक्षा में इन विषयों पर बातचीत होती है तो बच्चे ख़ुद भी विचार करते हैं और कई बार वे नए अनुभवों को चर्चा में जोड़ते भी हैं। शिक्षकों ने 'ज्ञान में वृद्धि' के लिए कक्षा में एक से अधिक मत वाले मुद्दे के समावेश को उपयोगी बताया। इसके समर्थन में उनके तर्क थे, 'हर चर्चा उन्हें लाभ पहुँचाती है। ज़रूरी नहीं है कि किताब में दिए विषय पर बातें करें। वे आपस में भी बातचीत कर सीखते हैं।'



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

इसी तरह एक अन्य भागीदार शिक्षक कहते हैं कि 'कई बार विद्यार्थी नई सूचनाएँ लाते हैं। सम्भव है ये सूचनाएँ ग़लत हों। लेकिन ग़लत को सही मानने से अच्छा यह जानना है कि ग़लत, ग़लत ही होता है।' इस चर्चा क्रम में शिक्षकों का मानना था कि विवादास्पद मुद्दे कक्षा को बाल-केन्द्रित बनाते हैं। इसके समर्थन में शिक्षकों के ये विचार देखे जा सकते हैं, 'कक्षा में चर्चा हो, तर्क-वितर्क हों, यही तो हम चाहते हैं', 'कक्षा में वाद-विवाद होना निर्माणवाद का एक लक्षण है।' यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि शिक्षकों के अनुसार सामाजिक विज्ञान की कक्षा में ऐसे विषयों पर चर्चा विद्यार्थियों को 'अच्छा नागरिक बनाने में सहयोग करती है', 'सामाजिक विज्ञान शिक्षण, नागरिकों को तैयार करता है। इसके लिए बहस होना ज़रूरी है', 'नागरिकों को उनके अधिकार और कर्तव्य से परिचित कराने के लिए बातचीत ज़रूरी है।'

शिक्षकों के विचारों से स्पष्ट है कि वे विवादास्पद विषयों के शिक्षणशास्त्रीय लाभ एवं उपयोगिता की चर्चा कर रहे हैं। लेकिन वे शिक्षक, नागरिकों की तैयारी का अर्थ केवल जागरूकता के सन्दर्भ में ले रहे हैं। इसी के अनुरूप वे विवादास्पद मुद्दों की महत्ता को आँक रहे हैं। उनका लक्ष्य विवादास्पद विषयों के उपयोग द्वारा कक्षा चर्चा को सुगम करना है। वे इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं कि इन विषयों का 'लाभ' आलोचनात्मक चिन्तन के सन्दर्भ में है, क्योंकि विवादास्पद विषयों के माध्यम से कक्षा में एकमात्र स्वीकृत औपचारिक ज्ञान के साथ-साथ अन्य व्याख्याएँ भी आती हैं। कई बार ये व्याख्याएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं जिन्हें आधार बनाकर विद्यार्थियों को सामाजिक सच्चाइयों से जूझने का विवेक और हिम्मत मिल सकती है।

सामाजिक विज्ञान की कक्षा में विवादास्पद मुद्दे

शिक्षकों ने बताया कि यद्यपि उनकी कक्षा में विवादास्पद विषयों पर चर्चा होती है लेकिन इसकी आवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है। बातचीत के क्रम में शिक्षकों से पूछा गया कि यदि उनके द्वारा कक्षा में विवादास्पद मुद्दों को शामिल करने का प्रयास नहीं किया जाता है तो ये मुद्दे कक्षा में कैसे आते हैं? इस विषय पर बात करने पर सामाजिक विज्ञान कक्षा में विवादास्पद विषयों के तीन स्रोतों का पता चलता है :

- शिक्षकों ने कक्षा में विवादास्पद विषयों के लिए पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु को आधार बनाया। इस सन्दर्भ में उन्होंने जेंडर और पर्यावरण के मुद्दों का उल्लेख किया। उदाहरण के लिए बताया कि घरेलू काम तक में लड़के और लड़कियों के बीच विभाजन है, इसी तरह उन्होंने स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं का उल्लेख किया। शिक्षकों का मानना था कि ऐसे विषयों की चर्चा के दौरान मतान्तर होता है। कक्षा में कई बार ज़ोरदार बहस भी होती है, लेकिन उन्हें यह मालूम होता है कि कक्षा चर्चा को क्या दिशा देनी है? शिक्षकों ने यह भी बताया कि इस तरह के विषयों के विपक्ष में तर्क देने वाले विद्यार्थी अपेक्षाकृत कम होते हैं। फिर भी वे अपने तर्क देते हैं। उनके तर्कों में परिवार के अनुभव शामिल होते हैं।

- शिक्षकों ने अपने साक्षात्कार में बताया कि समसामयिक घटनाओं के कारण भी कक्षा में विवादास्पद मुद्दे आते हैं। इसका उदाहरण देते हुए चुनाव के समय दल और राजनेता विशेष के प्रति लगाव के कारण होने वाले विवाद हैं। एक अन्य शिक्षक ने वोट के लिए, पैसे एवं साड़ी बाँटने की घटना को साझा किया। ऐसे ही एक शिक्षक ने जाति के नाम पर वोट देने का उदाहरण दिया। कुछ शिक्षकों ने स्थानीय घटनाओं का भी उदाहरण दिया– एक छात्रा पर

तेजाब फेंकने का प्रकरण और किसानों की आत्महत्या का प्रकरण। इस बारे में शिक्षकों ने मीडिया की भूमिका को भी रेखांकित किया। इसके लिए चीन-भारत के बीच सीमा विवाद का उल्लेख किया।

- विद्यार्थी समूहों के बीच आपसी विवाद के कारण कुछ ऐसे विषय सामाजिक विज्ञान की कक्षा में आते हैं जो विवादास्पद होते हैं। ऐसे विषय सामाजिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों से उपजते हैं। जैसे– जातिसूचक या क्षेत्रसूचक शब्दों के आधार पर चिढ़ाना। शिक्षक इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि ऐसे विषय सामाजिक विज्ञान की कक्षा में सीधे नहीं आते हैं, लेकिन जब विद्यार्थी शिकायत करते हैं या शिक्षकों को पता चलता है तो वे इन विषयों पर चर्चा करते हैं। ऐसे विषयों पर चर्चा करते समय कक्षा में अध्यापक ऐसे वयस्क के रूप में हो जाता है जो विद्यार्थियों के बीच झगड़े का फ़ैसला करने वाला होता है। एक भागीदार शिक्षक ने बताया कि इस स्थिति में जिस बच्चे को चिढ़ाया जाता है वह सहानुभूति पाने की इच्छा रखता है। इस दशा में वह ध्यान रखते हैं कि जो चिढ़ाने वाला है वह केवल 'डाँट न सुने', बल्कि अपनी धारणा को बदलने की कोशिश भी करे।

विवादास्पद मुद्दों पर कक्षा चर्चा

विवादास्पद विषयों को कक्षा में सम्बोधित करने के तरीक़ों के बारे में शिक्षकों ने बताया कि वे अपनी-अपनी कक्षाओं में इन विषयों को पढ़ाने के तरीक़ों के बारे में कक्षा में बहस और वाद-विवाद करवाते हैं। इसके लिए उन्होंने निम्नलिखित युक्तियों का उल्लेख किया– पक्ष-विपक्ष के दो समूह बनवाकर चर्चा, छोटे-छोटे समूहों में चर्चा और खुली चर्चा। शिक्षकों ने बताया कि वे ध्यान रखते हैं कि इस चर्चा में विद्यार्थी अपने मत के बारे में प्रमाण दें। विद्यार्थी बताएँ कि उन्हें सम्बन्धित जानकारी कहाँ से मिली। शिक्षकों का मानना था कि बच्चे अपने घर-परिवार में जो देखते और सुनते हैं, उससे प्रभावित होते हैं। ऐसे अभिभावक जो सार्वजनिक क्षेत्र में सक्रिय होते या वैचारिक प्रतिबद्धता रखते हैं उनके परिवारों के बच्चे एक विचारधारा विशेष की बात करते हैं। इस सन्दर्भ में शिक्षकों के कथनों का उदाहरण दिया जा रहा है–

'विद्यार्थियों के विचारों में पर्याप्त मतभेद होता है। इस मतभेद का कारण उनके परिवार की पृष्ठभूमि है। घर पर जो बातें सुनते हैं उसे वे साझा करते हैं।'

'कक्षा में सब बच्चे बोलें ऐसा नहीं होता है। कुछ बच्चे ही ज़्यादा बोलते हैं। लड़कियाँ इस तरह की बहसों में उतनी भागीदारी नहीं करती हैं।'

'वे आपस में बातचीत करने की बजाय पूछे गए प्रश्नों का जवाब देते हैं। कभी-कभी एक दूसरे के मत के ख़िलाफ़ बोलते हैं।'

ये उद्धरण स्पष्ट करते हैं कि विद्यार्थियों द्वारा कक्षा चर्चा में अपना मत प्रस्तुत किया जाता है। इस विषय पर चर्चा आगे बढ़ी तो भागीदार शिक्षकों ने बताया कि कुछ विषय, जैसे– जेंडर, दिव्यांगों के अधिकार, आदि ऐसे होते हैं जहाँ शिक्षक संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप कक्षा चर्चा का संचालन करते हैं। कुछ विषय ऐसे होते हैं जिनपर चर्चा करने पर वे भी असहज महसूस करते हैं। ऐसे ही एक विषय गे और लेस्बियन के मुद्दे का उदाहरण दिया।

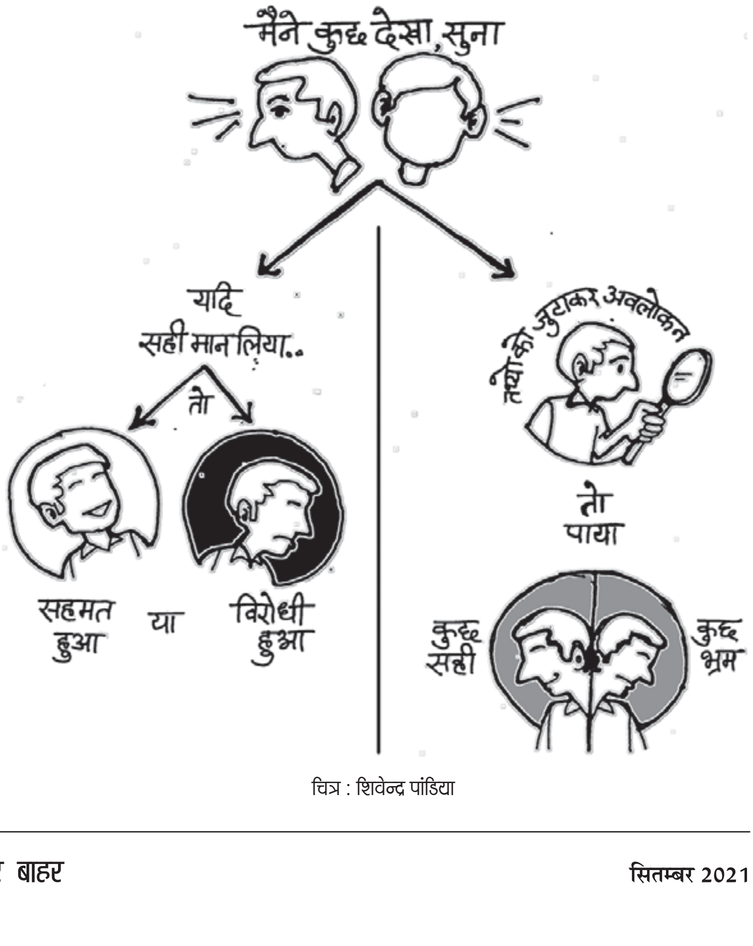
पाठ्यपुस्तकें और विवादास्पद मुद्दे

शिक्षकों के साथ चर्चा के दौरान यह भी सामने आया कि शिक्षकों का मानना है कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में इस तरह के विषय नहीं होते हैं। एक शिक्षक ने बताया कि किताबें विवादास्पद नहीं होती हैं, लेकिन उनमें

विषयों की प्रस्तुति इस तरीक़े से होती है कि वे कक्षा में विचार विमर्श का रास्ता तैयार करती हैं। उदाहरण के लिए, जेंडर के आधार पर होने वाली बहस का मुख्य स्रोत पाठ्यपुस्तक है। ऐसे ही एक अन्य शिक्षक ने बताया कि संवैधानिक मूल्यों की स्थापना और उसके अनुसार नागरिकों को तैयार करने का कार्य भी पाठ्यपुस्तक के सहयोग से कर सकते हैं।

शिक्षकों के मत से स्पष्ट होता है कि वे विवादास्पद विषयों को सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का हिस्सा न मानकर आकस्मिक और पूरक रूप में देखते हैं। वे अध्यापक की भूमिका में विवादास्पद विषयों को कक्षा में शामिल करने से तो सहमत हैं, लेकिन वे ऐसा सोद्देश्यपूर्ण तरीक़े से नहीं करते हैं। इसके समर्थन में अध्यापकों का तर्क है कि वे कक्षा को विषय से भटकने से बचाना चाहते हैं। सामाजिक विज्ञान में वे ज़्यादातर समसामयिक घटनाओं को विवादास्पद विषय के रूप में देखते हैं, जबकि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या में अनेक ऐसे स्थान होते हैं जहाँ सामाजिक आख्यानों, पूर्वाग्रहों, आदि को कक्षा में सम्मिलित किया जा सकता है। इन सम्भावनाओं की शिक्षकों द्वारा उपेक्षा की जाती है। शिक्षकों को ध्यान रखना चाहिए कि बिना तैयारी के इन विषयों पर चर्चा सम्भव नहीं है। उन्हें सूचनाओं के विभिन्न स्रोतों, जैसे– तर्क-वितर्क से सम्बन्धित लेख, मूल दस्तावेज़, फ़िल्म, आदि का प्रयोग करना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि स्रोत की वैधता की स्वयं जाँच करें और अपने विद्यार्थियों को बताएँ कि कैसे स्रोत की वैधता की जाँच करनी है। सामाजिक विज्ञान की कक्षा में विवादित विषयों का शिक्षण शिक्षकों के ज्ञान, नज़रिए और उनके शिक्षणशास्त्रीय फ़ैसले से प्रभावित होता है।

शिक्षकों को ध्यान देने की आवश्यकता है कि 'विवाद के मुद्दे' शीर्षक से कोई प्रकरण नहीं दिया होता है। इसके लिए पुस्तक में कोई अलग हिस्सा भी नहीं होता है। विषय को सन्दर्भ से जोड़ने पर, समसामयिक घटनाओं पर चर्चा द्वारा विद्यार्थियों को अपने अनुभव साझा करने पर ऐसे मुद्दे कक्षा में सोद्देश्यपूर्ण ढंग से शामिल किए जा सकते हैं।



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

अनसुलझे सवाल एवं कुछ निष्कर्ष

शिक्षकों की जिस बातचीत का यहाँ उल्लेख किया गया है उससे हमारे सामने एक विरोधाभास की स्थिति प्रकट होती है। हम अपने आसपास के परिवेश से लेकर टीवी चैनलों तक घमासान बहसों को देखते हैं। हम इससे प्रभावित होते हैं। अपने मत का निर्माण करते हैं। लेकिन कक्षा जैसे औपचारिक परिवेश में तैयारी के साथ इन बहसों की उपस्थिति नाममात्र की होती है। इसका कारण यह है कि हमने अच्छी शिक्षा और शिक्षण के बारे में जो धारणा बनाई है उसमें किसी भी प्रकार की वैचारिक उथल-पुथल की सम्भावना नहीं है। हमारी कक्षाएँ सीधी, सपाट होती हैं जो पुस्तकों से विज्ञान, गणित, भाषा और सामान्य ज्ञान प्रदान करने का लक्ष्य रखती हैं। इनमें बहस करना, ख़ासकर राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर बात करना, अच्छा नहीं माना जाता है। इसी कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था केवल अधीनस्थ तैयार करती है। ऐसे अधीनस्थ उत्पादक होते हैं, नवाचार करते हैं, प्रौद्योगिकी भी खोजते हैं लेकिन उन मुद्दों पर मौन हो जाते हैं जो उनके समाज को, रोज़मर्रा के जीवन को प्रभावित करते हैं। यह मौन 'विचारों के स्वराज' को ढँक लेता है।

इस अधिगम संस्कृति में हमारे शिक्षक भी योगदान करते हैं। वे ऐसे पेशेवर माहौल के अभ्यस्त हो जाते हैं जहाँ किताबों से सूचनाओं को देना, उदाहरण सहित व्याख्या करना, कुछ सवाल पूछकर आकलन कर देना आसान होता है। कुल मिलाकर, वे लोकप्रिय मान्यताओं या प्रचारित धारणाओं के ख़िलाफ़ जाकर शिक्षण करने का जोख़िम नहीं उठाना चाहते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि उनका अपना मत नहीं होता है।

आज़ादी के पचहत्तर वर्षों बाद भी हमारे समाज में अच्छे नागरिक की ही परिकल्पना अनुशासित और आज्ञापालक की है। इसी अर्थ में हम पढ़ते-पढ़ाते हैं। अच्छा विद्यार्थी या अच्छा नागरिक वही है जो कक्षा में शिक्षक या कक्षा के बाहर किसी अन्य नियन्ता के मत के समर्थन में तर्क दे। वह कक्षा और बाहर के जीवन में अधीनस्थ होने के लाभ से परिचित होता है। इस प्रवृत्ति को तोड़ने के लिए आवश्यक है कि हमारे परिवारों, समुदायों और कक्षाओं जैसे विचार विमर्श स्थलों पर असहमतियों को स्वीकारा जाए। कम-से-कम कक्षाओं में ऐसा परिवेश बनाना चाहिए जहाँ बच्चा अपने मत को रखने में झिझक महसूस न करे। अपनी राय को रखते हुए शिक्षक द्वारा किए जा रहे 'वैल्यू जजमेंट' से प्रभावित न हो। हमारे शिक्षकों को कक्षा में ऐसा परिवेश बनाना चाहिए जहाँ एकतरफ़ा फ़ैसले सुनाने या राय बनाने के स्थान पर बातचीत हो, पुरज़ोर बहस हो। यह बहस केवल अपने मत को बताने या उसपर ज़ोर देने के लिए न हो। दूसरों के मत भी सुने जाएँ। उनके प्रति आग्रही न बना जाए। दूसरों के मत को व उन्हें सिरे से ख़ारिज कर देने की तत्परता न हो। ऐसा करने पर ही 'विचारों का स्वराज' पोषित होगा जो स्वतंत्रता, बन्धुत्व और सामाजिक समरसता के लिए अपरिहार्य है।

ऋषभ कुमार मिश्र महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के शिक्षा विभाग में अध्यापक हैं। शिक्षा और समाज से जुड़े विषयों पर लेखन में सक्रिय हैं। इन्होंने केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालय से 'बच्चों की सामाजिक विज्ञान की समझ' विषय पर शोध कार्य किया है।

सम्पर्क : rishabhrkm@gmail.com